ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 127-129

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

मेरी पत्नी और भेड़िया' में दलित जारसत्ता

गुड़िया चौधरी

सहायक प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, गुरु नानक महाविद्यालय.वेलाचेर्री.चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 24.11.2019, Revised- 27.11.2019, Accepted - 30.11.2019 E-mail: guriyachoudhary@gmail.com

सारांश : *भारतीय समाज में दलित उत्पीड़न की करूण गाथा से सभी परिचित हैं। सादियों से शोषित, पीड़ित एंव उपेक्षित दलित वर्ग को न्याय दिलाने के लिए अनगिनत आन्दोलन चलाये जा चुके है। साहित्यकार, कलाकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता से लेकर आम जनता तक, सभी इस समस्या का हल ढूँढने की कोशिश कर रहे है, परंतु आज तक इस समस्या का कोई स्थायी हल ढूँढ़ा नहीं जा सका। दलितों की सामूहिक हत्याओं पर शोक व्यक्त किए जाते हैं, जुलूस निकाले जाते है, पत्र–पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ पर खबर छपती है, मगर शोषण एंव उत्पीड़न का यह अंतहीन सिलसिला कभी समाप्त नहीं होता। यह छलावा विगत कई वर्षो से हम देख रहे हैं। दलित आज भी नरकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। डॉ. धर्मवीर जी ने अपनी आत्मकथा के माध्यम से एक नये भारत की कल्पना की है। "जारमुक्त भारत, नकारामुक्त भारत और नंगमुक्त भारत होगा। यही हमारा भंगी होकर अपने आँगन से कूड़ा सकेरना (हटाना) है।" इनका मानना था कि जारसत्ता के रूप में जो गंदगी समाज में फैल रही है उसके खिलाफ अपनी आवाज उठानी पड़ेगी। इसके लिए अपनों के विरुद्ध ही क्यों न जाना पड़े।*

कुंजी शब्द – भारतीय समाज, उत्पीड़न, शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, आन्दोलन, जारसत्ता, कूड़ा, सकेरना, शोषण।

डॉ. धर्मवीर हिन्दी साहित्य जगत के एक ऐसे लेखक है जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से दलित विषयक लेखन और आलोचना को एक नया आयाम दिया। इन्होंने अपनी आत्मकथा 'मेरी पत्नी और भेड़िया' के माध्यम से समाज की सबसे संवेदनशील धारणा विवाहेत्तर स्त्री–पुरूष संबंधो के खिलाफ आवाज उठाया। इनसे पहले शायद ही किसी ने जारसत्ता या जारकर्म की बात की होगी। ये अपने विचारोत्तेजक लेखन और मौलिक दृष्टि के लिए जाने जाते है।

इनका लेखन विगत पैंतालिस साल से चल रहा था, परंतु चर्चा में और विवाद में ये दलित विषयक लेखन और आलोचना को लेकर आए। ये विवाहेतर स्त्री–पुरूष संबधों के खिलाफ थे। भरण–पोषण के बजाय तलाक और पुनर्विवाह करना उचित मान रहे थे। 'जारसत्ता' को कानून के द्वारा समाप्त करना चाहते थे। जारसत्ता के प्रश्न पर गैरदलित महिलाओं के साथ कुछ दलित महिलाएं भी डॉ. धर्मवीर को स्त्री–विरोधी कहने लगीं थीं। ये स्वंय अपनी पत्नी से तलाक के लिए एक दशक तक कोर्ट–कचहरी भागते रहे। इस दौरान हर दिन का हाल जो उन्होंने लिखा उसे 'मास्टर फाइल' नाम दिया था। उसी को आत्मकथा के रूप में प्रकाशित कराया तो नाम दिया– 'मेरी पत्नी और भेड़ीया'।

डॉ. धर्मवीर की आत्मकथा 'मेरी पत्नी और भेड़ीया' में मोरेलिटी की ताकत को देका जा सकता हैं। लेखक ने की जारकर्म और जारसत्ता की खटिया खड़ी कर दी, अर्थात् अब तक साहित्य में जिसे छिपाया जा रहा था। उसे धर्मवीर जी ने सबके समक्ष लाकर न सिर्फ खड़ा किया बल्कि उसका जमकर विरोध भी किया। अनिता भारती बार–बार लिखती हैं कि 'धर्मवीर की पुस्तक 'प्रेमचंद : सामंत का मुंशी' के लोकार्पण का दलित महिलाओं ने सशक्त विरोध किया। दलित महिलाओं ने धर्मवीर जी के दलित स्त्री विरोधी होने के खिलाफ जमकर नारे लगायें गए। इस कार्यक्रम में नारे ही नहीं जूते–चप्पल भी चलाये गए थे। जिसके बारे में प्रसिद्ध लेखक सूरजपाल चौहान जी ने लिखा है–"पूर्वाग्रहों से ग्रसित कुछ महिलाओं का इस कार्यक्रम में आना, बिना बात सुने या संवाद किये जूते, चप्पल चलाना, कौन सी बौद्धिकता है ? ऐसे कृत्यों से साफ पता चलता है की ये विचारों से कितनी दरिद्र हैं। ये केवल ऐसे ही काम कर सकती है।"

डॉ. धर्मवीर ने मुख्य धारा के दिग्गजों से मुठभेड़ की। जिसके कारण एक समय उनका अघोषित बहिष्कार किया जा रहा था। उस कठिन दौर में भी असहमतियों के बावजूद राजेन्द्र यादव 'हंस' में उनके लेख और समीक्षाएं छाप रहे थे। डॉ. धर्मवीर बुद्ध और डॉ अंबेडकर के धर्म विषयक निर्णयों पर प्रश्न उठा रहे थे।

डॉ. धर्मवीर अपने विचार के लिए समर्पित व्यक्ति थे। इन्होंने साहित्य आलोचना में समझौता विहीन आलोचना का रास्ता चुना था। यद्दपि ये पुरस्कारों में दलित लेखकों की भागीदारी के प्रबल पक्षधर थें परंतु ये कहते थे मुझे उनके पुरस्कार नहीं चाहिए तो समझौते क्यों करूं? ये दलित लेखक की आड़ में पैदा हुए चमचातंत्र से भी आगाह कर रहे थे।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

डॉ.धर्मवीर जी का 'मेरी पत्नी और भेड़िया' आत्मकथा साहित्यिक विधाओं में से एक है। जो कि अपने आप में एक सर्वश्रेष्ट एवं अमूल्य रचना है। डॉ. धर्मवीर जी मेरठ से ताल्लुक रखते थे। इन्होंने अपने समाज और जाति का वर्णन करते हुए अपने तथा परिवार के बारे में बहुत गहनतापूर्ण लिखा है। अतः यह आत्मकथा उनके जीवन की बहुमूल्य निधि है।

इन्होंने अपने जीवन को पूर्णरूप से पाठकों के सामने रख दिया है। किसी भी प्रकार का लुकाव–छिपाव नहीं है। ये अपने स्वभाव के अनुसार लेखनी करते थे। इन्होंने बहुत ही तार्किकता के साथ तथा स्पष्ट शब्दों में अपनी बात समाज में रखी है। अपनी आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने एक नये भारत की कल्पना की है। "जारमुक्त भारत, नकारामुक्त भारत और नंगमुक्त भारत होगा यही हमारा भंगी होकर अपने आँगन से कूड़ा सकेरना (हटाना) है।"

आत्मकथा का हर अध्याय एक दुसरे से भिन्न है। डॉ.धर्मवीर जी कानून को सर्वोच्च मानते थे। ये कानून के खिलाफ नहीं थे, किंतु "हिंदु विवाह अधिनियम 1955' और 'कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम 1984से संतुष्ट नहीं थे।"2 इनका मानना था कि व्यक्ति जब सब तरह से हार चुका होता है तब जाकर वह कानून की शरण में आता है। ऐसे में यदि कानून भी फैसला लेने में समय लगाती है तो यह सिर्फ उस व्यक्ति और उसके परिवार का ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र का भी नुकसान होता है। मैं अपनी पत्नी को तलाक दे रहा हूँ क्योंकि मेरी पत्नी अपने पत्नी धर्म को निभा नहीं पाई। "कोर्ट में जाने को वे तनिक भी बुरा नहीं मानते थे। धर्मवीर जी कहते है, मैं संसद द्वारा पारित किए गए हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13(1), (प), 13(1)(प–क) और 13(1), (प–ख) के अधिन हो कर कोर्ट के पास आया था। यह सब कानूनी प्रक्रिया है। यदि कानूनी प्रक्रिया को भी जज इस निगाह से देखते हैं तो यह उनके लिए अच्म्भे की बात थी।"3

इस आत्मकथा के माध्यम से 'तलाक' एक नये विकल्प के रूप में सामने आता है। यदि लाख कोशिसों के बावजूद भी जब पति–पत्नी के बीच रिश्ते अच्छे नहीं हो पा रहे है तो उन्हें अलग होकर, अपनी नई जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। सही भी है जीवन भर साथ रहकर एक दुसरे को कष्ट देने से अच्छा है एक नये शिरे से जीया जायें।

वे महिलाएं जो मोरेलिटी पर खड़ी हैं, जिन्होंने घरों को सुचारु ढंग से संभाला हुआ है और जो आत्मनिर्भर हो परिवार को आगे बढ़ा रही हैं, जो पति के साथ कंधे से कंधा लगा कर खड़ी हैं,सही मायने में वे ही आत्मनिर्भर और एक स्वच्छ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे रही हैं ।

यह आत्मकथा दलित समाज की स्थिति पर भी प्रकाश डालती है डॉ. धर्मवीर जी खुद जाति से चमार थे उन्होंने जातिगत भेद–भाव तथा गरीबी को बहुत करीब से देखा था। इसके साथ ही इस आत्मकथा में लीक से हट कर चलने की बात भी कि गई हैं। कैसे व्यक्ति चाहे तो वह अपने अनुसार अपना व्यवसाय चुन सकता है बशर्ते उसमें लगन होनी चाहिए अपने व्यवसाय (काम) के प्रति। वहीं यह आत्मकथा समाज की कुप्रथाओं का भी विरोध करती है कि अब तक जो हुआ वह गलत था किन्तु अब गलत नहीं करना है, जरुरी है कि अपनी मानसिकता को बदला जाए। परम्पराओं तथा संस्कारों के नाम पर इन कुप्रथाओं को ढ़ोना गलत है। जो संस्कार एक अच्छे समाज के निर्माण में बाधा उत्पन्न करते है उन्हें त्यागने में ही भलाई है। न कि जाति के नाम पर ढ़ोते रहने की।

जब व्यक्ति अपने समाज और जाति के द्वारा बनायी हुई लीक को तोड़ता है तो वह सचमुच इतिहास रचता है और इसके लिए अदम्य साहस की जरूरत होती है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम लेखक डॉ. धर्मवीर जी की आत्मकथा 'मेरी पत्नी और भेड़िया' में देख सकते है। उन्होंने जार सत्ता के विरूद्ध अपनी आवाज उठाई और शुरूआत खुद के घर से की। जब सुरेन्द्र उन्हीं के जाति के होते हुए यह कहते है कि– "आपको हमारे समाज का पता नहीं है। हमारी कौम में अस्सी प्रतिशत औरतें अपने देवरों के रह रही हैं।"4 तभी बाबूराम जी कहते है–"मैं भी इसी चमार कौम का हूँ। मैं अपनी पत्नी को अपने भाई के घर में नहीं रहने दूँगा। मैं उन के पैणड कर दूँगा। मैं एक परसेन्ट भी बर्दाश्त नहीं करूँगा।"5 अतः देख सकते है कि जिस सोच को लेकर धर्मवीर जी ने अपने समाज और जाति के विरूद्ध आवाज उठाई थी वह असर करने लगा था।

इस आत्मकथा के द्वारा परिवार तथा रिश्तों की ऐहमियत का भी पता चलता है। पति–पत्नी के बीच आपसी कल्ह में कैसे बच्चों का उज्जवल भविष्य बर्बाद होने लगता है। यदि समय रहते नहीं सुधारा गया तो पूरा परिवार बिखर जाता है।

यह आत्मकथा समाज के उन दोहरे व्यक्तित्व वाले लोगों का भी पर्दा फाँस करता है जो एक तरफ खुद को हिमायती बताते है और दूसरी तरफ गड्ढा खोदते है।

यह आत्मकथा उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है जो किसी बंधन में बंध कर या मुश्किलों से हारें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

मानकर अपना विकास नहीं कर पाते। सम्पूर्ण आत्मकथा जीवन के प्रति जीने की लालसा है। जीवन में संघर्षो से परेशान होकर वैराग्य या मोक्ष की कामना न करते हुए गृहस्थ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। यह आत्मकथा हमे यह भीं बताता है कि किस प्रकार एक व्यक्ति अपने जीवन में संघर्ष करता है। बेरोजगारी व आर्थिक तंगी के बावजूद भी अपने कर्तव्यो से दूर नहीं भागता और जीवनभर संघर्षरत रहता है।

लेखक द्वारा उठाया गया मुद्दा जारकर्म और जारसत्ता यह भी समाप्त हो सकता है जब हम अपने सोच में परिवर्तन लायेगें। हर रिश्तें की अपनी एक मर्यादा होती है। आज आधुनिकता की दौड़ में हम अपने आपको आधुनिक कहते हुए उन मर्यादाओ को तिलांजलि दे रहे। आधुनिक होना गलत बात नहीं है किन्तु आधुनिकता की आड़ में नैतिक मूल्यों, अपने कर्तव्यों तथा मर्यादाओं की अनदेखी करना गलत है।

आज समाज में जारकर्म और जारसत्ता दोनों ही अपनी पैठ बना रहे है, इसलिए क्योंकि हम उनका विरोध नहीं कर रहे। सोचते है कि ये उनके घर की बात है हम क्यों फँसे लेकिन उनके घर की बात कब अपनी हो जाये पता नहीं चलता और अंत में अपनी बदनामी के डर से इसे स्वीकार कर चुप बैठ जाने से अच्छा होगा कि इसके विरुद्ध आवाज उठाई जाए और यह तभी सम्भव होगा जब व्यक्ति अपने और अपनों के प्रति तथा समाज के प्रति जागरूक होगा।

सुधार की बात अपने घर से होनी चाहिए। कबीरदास जी कहते है कि .

"कबीरा खड़ा बजार में
लिए लुकाठी हाथ
जो घर जारा आपना
चले हमारे साथ। "

कबीर दास जी के इस दोहे को धर्मवीर जी ने भलीभांति चरितार्थ किया है। जारकर्म और जारसत्ता से लिप्त अपने भाई महीपाल और अपनी पत्नी रमेश के विरुद्ध आवाज उठाई। अन्तिम रूप नें अपनी बात रखते हुए धर्मवीर जी कहते है कि –"अब तक दुनिया में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों के अनेक समाधान दिए गए हैं पर यह मेरा समाधान है कि .

– अच्छी स्त्री को बुरी स्त्री के खिलाफ लड़ना है।
– अच्छे पुरूष को अच्छी स्त्री का साथ देना है।
– अच्छी स्त्री को अच्छे पुरूष का साथ देना है।"6

अक्सर हम देखते या पढ़ते हैं कि लेखक अपने विषय में या अपनी जाति के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है किन्तु कुछ ऐसे विरले भी होते है जो अपने लेखनी के प्रति इतने ईमानदार होते है जो सच है तो है उन्हीं में से एक डॉ.धर्मवीर जी है। अपनी जाति और परिवार की बुराइयों तथा कमियों को सबके सामने बेबाकी से रखना बड़ी बात है।

हर तरह के अधिकारों से वंचित दलित–वर्ग को आज भी तथाकथित सवर्णवादी शोषकीय शक्तियों के घृणा एंव तिरस्कार को झेलना पड़ता हैं। ये शोषक शक्तियाँ अपनी दुधारी तलवार से पहले दलित हितों पर वार करती हैं, फिर छ्दम सहानुभूति प्रकट करते हुए दलितों का मसीहा बन जाते हैं। इस प्रकार हम इस आत्मकथा में जारकर्म तथा दलित समस्याओं को भी देख सकते हैं।

वर्तमान समाज में आये दिन ऐसी घटनाएँ सुनने को मिलती है कोई भी हो चाहे स्त्री या पुरुष ऐसे लोगो का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए तभी उनमे समाज का डर होगा जब तक ठोस कदम नहीं उठाए जाएगे तब तक यह सम्भव नहीं हो सकता।

मेरे विचार से यदि किसी साहित्यकार की किसी भी साहित्य या रचना से व्यक्ति प्रभावित होकर कुछ सिखता है या प्रेरित होता है तो सही मायने में यह उस साहित्यकार की और उस साहित्य की सबसे बड़ी सिद्धि होगी। अंततः मैं यही कहना चाहुगीं

"है आत्मकथा ऐसे व्यक्ति की,
जिससे परिस्थितियाँ हारी और हारा औरों का अभीमान वह होकर विकलांग, फिर भी न हारा अपना स्वभिमान, हार गया वह समाज, जिसके विरूद्ध उसने उठाया अभियान। गया छोड़ वह संसार, पर रह गया उसका ज्ञान।"

(स्वरचित)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं.–6(वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
2. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं.–206(वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
3. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं. –1044 (वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
4. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं.–39 (वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
5. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं.–40(वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
6. डॉ. धर्मवीर–मेरी पत्नी और भेड़िया–पृ.सं.–5(वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009)
7. हंस पत्रिका, अप्रैल –2017

*****